# इकाई 30 समकालीन मार्क्सवादी चिंतन (भारत)

## इकाई की रूपरेखा


30.0 उद्देश्य
30.1 प्रस्तावना
30.2 भारतीय मार्क्सवादी चिंतन की विशिष्टता
30.3 भारतीय मार्क्सवादी और ऐतिहासिक भौतिकवाद
30.4 औपनिवेशिक शासन के बारे में भारतीय मार्क्सवादियों के विचार
30.5 भारतीय मार्क्सवादी और भारतीय स्वतंत्रता की प्रकृति
30.6 भारतीय राजसत्ता और शासक वर्ग के बारे में मार्क्सवादियों के विचार
30.6.1 भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन में विभाजन
30.6.2 भारतीय मार्क्सवादी और भारतीय राज
30.7 भारतीय मार्क्सवादी और विदेश नीति
30.8 भारतीय मार्क्सवादी और कांग्रेस
30.9 भारतीय मार्क्सवादी और जाति व्यवस्था
30.10 भारतीय मार्क्सवादी और राष्ट्रीयता का प्रश्न
30.11 भारतीय मार्क्सवादी और संगठनिक रणनीति
30.12 सारांश
30.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें
30.14 बोध प्रश्नों के उत्तर


## 30.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप समझ पायेंगे :

- भारतीय मार्क्सवादियों के चिंतन की विशिष्टता
- ऐतिहासिक भौतिकवादी, भारतीय इतिहास की मंजिलें, भारतीय स्वतंत्रता की प्रकृति, भारतीय राज्यसत्ता और शासक वर्ग के चरित्र, विदेश नीति, कांग्रेस पार्टी, जाति व्यवस्था, और राष्ट्रीयता के प्रश्नों के सापेक्ष भारतीय मार्क्सवादियों की स्थिति, तथा
- सांगठनिक रणनीति के प्रसंग में भारतीय मार्क्सवादियों के विचार।

## 30.1 प्रस्तावना

इस इकाई में समकालीन मार्क्सवादी चिंतन की चर्चा की गई है। इसके अंतर्गत मुख्य कम्युनिस्ट पार्टियों—भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी लेनिनवादी) को लिया गया है। इन पार्टियों के दृष्टिकोण से आपके समकालीन मार्क्सवादी चिंतन का एक सामान्य बोध हो जायेगा।

## 30.2 भारतीय मार्क्सवादी चिंतन की विशिष्टता

भारत में मार्क्सवादी चिंतन का पश्चिम की भांति एक सुविकसित स्तर नहीं है। मार्क्सवाद पाश्चात्य बौद्धिक परंपरा की उपज है। पाश्चात्य विश्व में बौद्धिक विकास का तर्क एक निर्णायक मंजिल तक आ चुका है। पुनर्जागरण सुधार आंदोलन और प्रबोधन प्रयासों ने

पश्चिम के बौद्धिक इतिहास को एक सृजनात्मक चरण, मार्क्सवाद, तक पहुंचाया। इस नये चिंतन की आधारशिला मार्क्स और एंगेल्स ने रखी थी। भारत में हमें वैसी समृद्ध बौद्धिक परंपरा नहीं मिलती। हमारी बौद्धिक परंपरा में मौलिक चिंतन के लिए अति अल्प अवकाश मिलता है। एक मार्क्सवादी के लिए मौलिक और रचनात्मक होना अत्यंत दुष्कर सिद्ध होता है। इसके बावजूद, तीसरी दुनिया के अनेक देशों की तुलना में भारतीय मार्क्सवादी परंपरा कुछ बुरी नहीं है। इसका एक लंबा इतिहास है। भारत के मार्क्सवादी बौद्धिक मुख्यत: कम्युनिस्ट पार्टियों के आसपास हैं। इनमें से कुछेक अन्य सृजनात्मक क्षेत्रों में ही मिलते हैं।

## 30.3 भारतीय मार्क्सवादी और ऐतिहासिक भौतिकवाद

भारत के कम्युनिस्ट हमेशा से एक मार्क्सवादी ढांचे के अंतर्गत व्यावहारिक समस्याओं के समाधान के लिए प्रयासशील रहे हैं। दार्शनिक चिंतन के लिए बहुत कम समय वे निकाल पाये हैं। उनका आधारभूत सरोकार भारतीय परिस्थितियों में ऐतिहासिक भौतिकवाद के प्रयोग से रहा है। अधिकांश भारतीय मार्क्सवादियों का संवाद भारतीय समान संबंधी मार्क्स की रचनाओं में रहा है। भारतीय इतिहास के निरूपण में मार्क्स ने दो महत्वपूर्ण बिंदु सामने रखे थे। पहला यह कि अंग्रेजी शासन के पहले भारतीय समान एक अवरुद्ध/जड़ताग्रस्त समाज था। ग्रामीण-सामुदायिक और जाति आधारित समाज ऐसा सामाजिक ढांचा प्रदान कराते थे जिसके अंतर्गत भारतीय अर्थव्यवस्था अपरिवर्तनशील बनी रही थी। दूसरा यह कि भारतीय समाज के उपरोक्त पहलू के विध्वंस में सहायक होकर अंग्रेजी शासन परोक्ष रूप से वरदान सिद्ध हुआ और उसने पुनसृजन की परिस्थितियां रचीं। स्वयं मार्क्स की उक्ति इस प्रकार है : "भारत में उनके (अंग्रेजों के) शासन के इतिहास के पृष्ठों से उपरोक्त विध्वंस से अधिक कुछ का शायद ही पता चलता है। पुनसृजन का कार्य मलबे के ढेर से शायद ही संभव होता है। फिर भी इस प्रक्रिया की शुरुआत हो चुकी है।

अंग्रेजी शासन अपने ही द्वारा प्रवर्तित परिवर्तनों की प्रक्रिया रोक नहीं सकता था। इन परिवर्तनों की स्वाभाविक परिणति राष्ट्रीय एकता के रूप में होनी थी। और फिर प्रेस की स्वतंत्रता और अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार ने भारतीय समाज व्यवस्था में मूलगामी परिवर्तन किए। नवीन विचारों से युक्त शिक्षित समुदाय ने इस समाज के राजनीतिक रूपांतरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। किसी भी इतिहास का बोध प्राप्त करने के लिए मार्क्सवादियों के पास एक ऐतिहासिक ढांचा है। ऐतिहासिक विकास की कुछ विशेष मंजिलें हैं। जैसे आदिम साम्यवादी, दास व्यवस्था, सामंतवाद और पूंजीवाद—प्रत्येक समाज का ऐतिहासिक विकास इन मंजिलों से गुजरता है। कुछेक प्रमुख कम्युनिस्टों ने उपरोक्त ऐतिहासिक ढांचे का यांत्रिक रूप से प्रयोग किया। अपनी पुस्तक 'भारत: आदिम समाजवाद से दास प्रथा तक', में श्रीपाद अमृत डांगे ने भारतीय इतिहास में दास प्रथा का अस्तित्व स्वीकार किया। लेकिन, अधिकांश भारतीय कम्युनिस्ट इस दृष्टिकोण को अस्वीकार करते हुए भारतीय इतिहास को बौद्धिक रचनात्मक दृष्टि से समझने का प्रयास करते हैं। ये सभी इस बात से सहमत हैं कि भारतीय इतिहास में दास व्यवस्था का अस्तित्व नहीं था। दास प्रथा की मंजिल से गुजरे बिना ही आदिम समाज जाति आधारित समाज व्यवस्था में रूपांतरित हो जाता है। भारतीय सामंतवाद ने जाति-व्यवस्था को अपने में अंतर्भुक्त कर लिया। योरोप के सामंतवाद से इसकी समानता इस बात में है कि यहां अर्ध-दासता की स्थिति नहीं मिलती जो योरोपीय सामंतवाद का अभिन्न अंग है।

**बोध प्रश्न 1**

**टिप्पणी :** i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिये रिक्त स्थान का प्रयोग करें।
ii) अपने उत्तर की जांच इकाई के अंत में दिए उत्तर के आधार पर करें।

1) श्रीपाद अमृत डांगे से अधिकांश भारतीय मार्क्सवादियों का मतभेद किस बिंदु पर है?

.....

.....

.....

.....

## 30.4 औपनिवेशिक शासन के बारे में भारतीय मार्क्सवादियों के विचार

सभी भारतीय मार्क्सवादी इस बिंदु पर सहमत हैं कि औपनिवेशिक शासन के अधीन भारत पूंजीवादी विकास की प्रक्रिया से गुजरा था। अंग्रेजी शासन ने भारतीय समाज में कुछ मूलगामी रूपांतरण किए। सामाजिक प्रगति के लिए बाधक बन चुकी कुछ सामाजिक संस्थाओं जैसे ग्रामीण समुदायों को उसने विध्वंस किया। औपनिवेशिक नीति ने दस्तकार समुदाय को प्रभावित किया। औपनिवेशिक शासन की **डि-इंडस्ट्रियलाइज़ेशन (विऔद्योगिकरण)** नीति के चलते वे घोर दरिद्रता की स्थिति में ठेल दिए गए। अंग्रेजी शासन के सकारात्मक पहलुओं को भी पहचानना आवश्यक है, जिनके फलस्वरूप आधुनिक उद्योगों के विकास की परिस्थितियां बनीं। भारत में रेलवे की शुरुआत के साथ, मार्क्स की प्रत्याशा के अनुरूप भारत औद्योगिकीकरण की मंजिल से अनिवार्यतः गुजरना था यद्यपि अंग्रेजी शासन का ऐसा कोई इरादा मंतव्य नहीं था। मार्क्स के पर्यवेक्षण के अनुसार "लोहे और कोयले से भरपूर किसी देश के संचार माध्यम में मशीनतंत्र का प्रवर्तन करने के बाद आप इसे इसके Fabrications से वंचित नहीं रख सकते। रेलवे संचार की फौरी तथा वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आवश्यक औद्योगिक प्रक्रियाओं के बिना रेलवे का जाल नहीं बनाए रखा जा सकता। और उपरोक्त आवश्यकताओं के फलस्वरूप ही रेलवे से प्रत्यक्ष रूप से नहीं जुड़े उद्योग-क्षेत्रों में मशीनतंत्र के प्रयोग को बल मिलता है। इसलिए रेलवे प्रणाली, वस्तुतः भारत में आधुनिक उद्योगों की प्रवर्तक सिद्ध होगी। रेलवे प्रणाली में प्रतिफलित आधुनिक उद्योग उस "आनुवंशिक/पारंपरिक श्रमविभाजन को समाप्त कर देगा जिस पर ही भारत की प्रगति एवं शक्ति के सामने निर्णायक अवरोध, जाति व्यवस्था टिकी हुई है।"

अंग्रेजी शासन भारत की आर्थिक प्रगति रोक नहीं पाया। भारत में पूंजीवादी विकास ने एक मंजिल प्राप्त की। दो विश्व युद्धों के बीच की अवधि में बड़े पैमाने पर औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया पूरी हुई। इससें भारत की स्वाधीनता अभियान को समर्थन देने के लिए भारतीय पूंजीपति वर्ग को आर्थिक संबल मिला।

**बोध प्रश्न 2**

**टिप्पणी :** i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिये रिक्त स्थान का प्रयोग करें।
ii) अपने उत्तर की जांच इकाई के अंत में दिए उत्तर के आधार पर करें।

1) भारतीय समाज पर अंग्रेजी शासन के सकारात्मक/नकारात्मक प्रभाव क्या थे?

.....

.....

.....

.....

## 30.5 भारतीय मार्क्सवादी और भारतीय स्वतंत्रता की प्रकृति

भारत के स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भारतीय स्वतंत्रता की प्रकृति मार्क्सवादियों के बीच विवाद का बिंदु बन गई। इस मसले से संबंधित विवाद से कम्युनिस्टों के मतभेद उभर कर आए। स्वतंत्रता के प्रकृति के बारे में मूलतः तीन प्रकार के विचार थे। कम्युनिस्टों के एक हिस्से ने भारतीय स्वतंत्रता को धोखाधड़ी का नाम दिया। भारत अंग्रेजी शासन के अधीन एक उपनिवेश था और तथाकथित स्वतंत्रता के बाद अंग्रेजी तथा अमरीकी साम्राज्यवाद के नव उपनिवेश में बदल गया था। दूसरे समूह के विचारों के अनुसार भारत ने सही अर्थों में स्वतंत्रता प्राप्त की थी और अब स्वतंत्र आर्थिक विकास के माध्यम से वह साम्राज्यवादी विश्व के शिकंजे से पूरी तरह स्वतंत्र हो सकेगा। तीसरे समूह की वैचारिक स्थिति उपरोक्त दोनों के बीच की है। यह भारत की स्वतंत्रता को स्वीकार तो करता है, लेकिन इस बात पर भी बल देता है कि साम्राज्यवाद को खतरा बराबर बना हुआ है जिससे निपटने के लिए सदिच्छा मात्र पर्याप्त नहीं है।

## 30.6 भारतीय राजसत्ता और शासक वर्ग के बारे में मार्क्सवादियों के विचार

### 30.6.1 भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन में विभाजन

भारतीय राजसत्ता और शासक वर्ग के चरित्र के प्रश्न पर भारत के कम्युनिस्टों के बीच मतभेद उभरे थे। स्वातंत्र्योतर इतिहास में कांग्रेस पार्टी की भूमिका भी एक विचारणीय बिंदु है। स्वतंत्रता के बाद हुए राजनीतिक रूपांतरण से कम्युनिस्टों के बीच व्यापक विवादों को जन्म दिया और अंततः पार्टी को विभाजन की स्थिति का सामना करना पड़ा। प्रत्येक गुट पार्टी के अंतर्गत एक विशेष राजनीतिक प्रवृत्ति बना रहा। 1964 तक कम्युनिस्ट पार्टी एक मंच के रूप में क्रियाशील रही। अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन में पड़ी फूट ने मतभेदों को और उग्र बना दिया। कम्युनिस्ट पार्टी का औपचारिक रूप से विभाजन 1964 में हुआ। लेकिन यह क्रिया यहीं नहीं रुकी। वर्ष 1967 में एक और विभाजन हुआ। वर्तमान समय में समूचे भारत में अनेक विभाजित समूह हैं। लेकिन कम्युनिस्ट राजनीति के अंतर्गत तीन प्रमुख समूह ऐसे हैं, जिनका राजसत्ता योजना और शासक वर्ग संबंधी मसलों पर मतभेद गंभीर चर्चा की अपेक्षा करता है।

### 30.6.2 भारतीय मार्क्सवादी और भारतीय राज

राजसत्ता के चरित्र के प्रश्न पर भारतीय कम्युनिस्टों का दृष्टिकोण उपकरणवादी है। राजसत्ता शासक वर्गों का उपकरण है और उनके हितों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए कार्य करती है। भारतीय राजसत्ता के संबंध में प्रत्येक कम्युनिस्ट पार्टी का एक राजनीति सिद्धांत है। शासक वर्ग की एक समय भारतीय राजसत्ता के चरित्रांकन में सहायक हो सकती है। भारत में हम तीन कम्युनिस्ट पार्टी पाते हैं : भा.क.पा., मा.क.पा. और भा.क.पा. (मा-ले)। हमें भारतीय राजतंत्र के चरित्र के प्रश्न पर प्रत्येक पार्टी के दृष्टिकोण को समझना होगा। भा.क.पा. की प्रस्थापना इस प्रकार है : "भारत में राजसत्ता समग्र रूप में राष्ट्रीय पूंजीपतियों के वर्गीय शासन का अभिकरण है, और इसके अंतर्गत बड़े पूंजीपतियों का शक्तिशाली प्रभाव है। यह वर्गीय शासन भूस्वामियों से जुड़ा हुआ है। उपरोक्त कारक राजकीय सत्ता के अंतर्गत प्रतिक्रियावादी शक्तियों को बढ़ावा देते हैं।"

उपरोक्त वक्तव्य के दो भाग हैं। पहला यह कि राजसत्ता बड़े पूंजीपति वर्ग के हाथ में है, जो राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के रूप में उभरा। ग्रामीण भारत के भूस्वामियों से अपने संबंध उसने समाप्त नहीं किए हैं। यह तथ्य भारतीय राजनीति में प्रतिगामी शक्तियों के उभार का प्रोत्साहन मिलता है। राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग की प्रगतिशील भूमिका को वे स्वीकार करते हैं। शासक कांग्रेस पार्टी इसी वर्ग की पार्टी होने के नाते सामाजिक प्रगति का अभिकारक बन सकती है। आधारभूत रूप में, कांग्रेस पार्टी ग्रामीण भारत के सामंती हितों के विरुद्ध संघर्ष में समर्थ हो सकती है।

मा.क.पा. की प्रस्थापना इस प्रकार है : "वर्तमान भारतीय राजसत्ता, बड़े पूंजीपतियों के नेतृत्व पूंजीपतियों और भूस्वामियों के वर्गीय शासन का औजार है जो पूंजीवादी विकास को प्रोत्साहित करने के लिए विदेशी वित्तीय पूंजी से अधिकाधिक समझौते कर रहे हैं। हमारे राष्ट्रीय जीवन में राजसत्ता की भूमिका और प्रकार्य उपरोक्त वर्गीय चरित्र से ही सारभूत रूप में निश्चित होते हैं।"

मा.क.पा. की दृष्टि में शासक वर्ग का संयोजन पूंजीपतियों और भूस्वामियों से हुआ है। भारतीय राजसत्ता में इन दोनों की साझेदारी है। और फिर, भारतीय पूंजीपति विदेशी पूंजीपतियों से गंठजोड़ कर रहे हैं। राजसत्ता, पूंजीपतियों और भूस्वामियों का उपकरण है। कांग्रेस पार्टी इन्हीं वर्गों की पार्टी है। भारतीय राजनीति में प्रगतिशील भूमिका निभाने का इसका सामर्थ्य बहुत कम है। सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक प्रगति का कोई प्रश्न ही नहीं उठता, जब तक कि इस राज्यसत्ता को क्षीण, ध्वस्त करके इसके स्थान पर जनता के जनावाद की स्थापना नहीं की जाती।

मा.क.पा. (मा-ले) कोई समरूप राजनीतिक समूह नहीं है। इस सामान्य मंच के अंतर्गत अनेक समूह सक्रिय हैं। पार्टी के अंदर प्रभुत्वशाली विचार सारणी इस प्रकार ही है : "कांग्रेसी शासन के अंतर्गत भारत कहने मात्र के लिए स्वतंत्र है तथ्यतः यह अर्ध-औपनिवेशिक और अर्ध-सामंती देश से अधिक कुछ नहीं है। कांग्रेस पार्टी प्रशासन भारतीय सामंती नरेशों, बड़े

भूस्वामियों और दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों के हितों का प्रतिनिधित्व करती है। दूसरे शब्दों में भारतीय शासक वर्ग का एक दलाल चरित्र है। वे अमरीकी और रूसी साम्राज्यवाद के अधीन बने हुए हैं। पूंजीपतियों और भूस्वामियों के बीच मित्रवत संबंध हैं। भारतीय राज्यसत्ता इन वर्गों का ही उपकरण है, जो भारतीय जन समुदाय के हित में कभी काम नहीं करते। इस राज्यसत्ता का चरित्र प्रतिक्रियावादी है। वर्तमान भारतीय राज्यसत्ता और कांग्रेस पार्टी सामाजिक परिवर्तन के अभिकरण नहीं हो सकते।

भा.क.पा. और मा.क.पा. दोनों ही भारतीय राज्यसत्ता की एक सीमा तक स्वायत्तता स्वीकार करते हैं। वर्तमान वर्गीय संयोजन के अंतर्गत समाज के विकास में राज्य एक निर्णायक भूमिका निभा सकता है। दोनों ही पार्टियां योजनाबद्ध विकास को कार्यक्रम स्वीकार करती हैं। यह योजनाबद्धता भारतीय पूंजीपति वर्ग की शक्ति के लिए संपूरक बनती है। अपने विलंबित विकास के कारण भारतीय पूंजीपति वर्ग के पास स्वतंत्र विकासपथ अपनाने के लिए पर्याप्त पूंजी और तकनीक नहीं है। राजकीय अथवा सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम उन्हें अपने विकास में सहायता पहुंचा सकते हैं। भारतीय अर्थतंत्र में सार्वजनिक क्षेत्र ने पूंजी प्रधान उद्योगों को अपनाया है।

इस तथ्य ने भारतीय पूंजीपति वर्ग को विदेशी पूंजी पर निर्भरता कम करने में सहायता की है। अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में एक सीमा तक जोड़-तोड़ का सामर्थ्य भी उन्हें प्राप्त हुआ है।

**बोध प्रश्न 3**

**टिप्पणी :** i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिये रिक्त स्थान का प्रयोग करें।
ii) अपने उत्तर की जांच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर के आधार पर करें।

1) मा.क.पा. के अनुसार भारत के शासक वर्ग का संयोजन किन-किन वर्गों से हुआ?

.....

.....

.....

.....

## 30.7 भारतीय मार्क्सवादी और विदेश नीति

विदेश नीति के क्षेत्र में भा.क.पा. और मा.क.पा. दोनों ही गुट-निरपेक्षता नीति का समर्थन करते हैं। भारत पश्चिमी देशों अथवा सोवियत किसी भी गुट का सदस्य नहीं है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में एक स्वतंत्र पथ अपनाया है। राष्ट्रीय हितों के बेहतर संरक्षण में यह तथ्य सहायक बना है। सोवियत संघ और अमेरिका से उन्हें आर्थिक अनुदान मिलता है।

## 30.8 भारतीय मार्क्सवादी और कांग्रेस

नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी द्वारा योजनाबद्ध विकास और विदेश नीति के प्रसंग में सीधा सपाट और स्वतंत्र दृष्टिकोण अपनाने से कम्युनिस्ट पार्टी जनों में संभ्रम की स्थिति बन गई। भा.क.पा. के अनुसार नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के हितों का प्रतिनिधित्व करती थी। इंदिरा गांधी काल तक उनकी यह विचारसरणी बनी रही। कांग्रेस पार्टी ने गुट-निरपेक्षता नीति का अनुसरण किया। भारतीय अर्थतंत्र के क्षेत्र में इतने सार्वजनिक क्षेत्र को प्राथमिकता दी। यहां पर मा.क.पा. का दृष्टिकोण भा.क.पा. से कुछ भिन्न है। गुट-निरपेक्षता नीति भारतीय पूंजीपति वर्ग के, जो तीसरी दुनिया के देशों में समुचित विकास प्राप्त वर्ग है, चरित्र का परिणाम है। योजनाबद्ध विकास नीति का अनुसरण उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय पूंजी के सापेक्ष स्वायत्तता बनाये रखने के लिए किया। यह संभावना अवश्य है कि आर्थिक संकट में अधिकाधिक उतरने के साथ-साथ भारतीय पूंजीपति वर्ग विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी विदेशी पूंजी संस्थानों पर निर्भर करे।

भा.क.पा. और मा.क.पा. इस बात पर सहमत हैं कि कांग्रेस एक धर्मनिरपेक्ष पार्टी है लेकिन प्रायः साम्प्रदायिक शक्तियों के साथ समझौता कर लेती है। नेहरू, इंदिरा जैसे व्यक्तित्वों के कांग्रेस राजनीति में वर्चस्व ने पार्टी को अधिक अधिनायकत्ववादी स्वरूप दे दिया। इंदिरा गांधी के अधीन तो कांग्रेस पार्टी में नेतृत्व को किसी आंतरिक संगठनिक चुनाव का सामना नहीं करना पड़ा। इसीलिए मा.क.पा कांग्रेस का चरित्रांकन अधिनायकत्ववादी पार्टी के रूप में करती है, यद्यपि भा.क.पा. इस चरित्रांकन से सहमत नहीं है।

भा.क.पा. और मा.क.पा. दोनों ही के पास साम्प्रदायिकता और जाति व्यवस्था संबंधी कोई राजनीतिक सिद्धांत नहीं। राष्ट्रीय आंदोलन की अवधि में अधिकांश नेताओं ने अपने अनुभवों से ही एक बोध का स्तर प्राप्त किया था। उपरोक्त दोनों मसलों पर उनका बोध उदारवादी परंपराओं से भिन्न नहीं दिखता। भारत एक बहु सामुदायिक समाज है। वर्गीय राजनीति के समुचित व्यवहार के लिए अंतर्सामुदायिक सद्भाव आवश्यक है। जन राजनीति के मूलगामी स्वरूप अपनाने के साथ ही सांप्रदायिक राजनीति को शिकस्त मिलेगी।

**बोध प्रश्न 4**

**टिप्पणी :** i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिये रिक्त स्थान का प्रयोग करें।
ii) अपने उत्तर की जांच इकाई के अंत में दिए उत्तर के आधार पर करें।

1) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के अनुसार कांग्रेस किन वर्गीय हितों का प्रतिनिधित्व करती है?

.....

.....

.....

.....

## 30.9 भारतीय मार्क्सवादी और जाति व्यवस्था

जाति व्यवस्था के प्रश्न पर उनके दृष्टिबोध का एक ऐतिहासिक आयाम है।. आदिवासी समाज से किसान समाज में रूपांतरण की प्रक्रिया में भारत ने जाति-व्यवस्था को अंतर्भुक्त कर लिया है। जातियां, आधारभूत रूप में श्रम विभाजन पर आधारित उद्यम समूह हैं। पूंजीवाद के अंतर्गत जाति व्यवस्था रूपांतरित होगी। वर्गाधारित राजनीति जातिगत राजनीति पर अंकुश लगाने में समर्थ होगी। जातिगत राजनीति शासक वर्गीय राजनीति का ही अंग है। जैसा कि बी.टी. रणदिव ने अपना पर्यवेक्षण सामने रखा है : "धर्मांधता साम्प्रदायिकता और जातिवाद की निरंतरता उस समझौतापरस्ती से ही जुड़ी हुई है जिसके चलते पहले के भूमि/कृषि संबंध बने रहे हैं।" क्रमशः जातिवाद के प्रश्न पर उनके बोध में परिवर्तन आ रहा है। जाति व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष विचारात्मक एवं राजनीतिक स्तरों पर चलाया जाता है। जातिगत स्वरूपों की वैधता उच्चजातियों द्वारा निचली जातियों का शोषण संभव बनाती है। जाति व्यवस्था के विचारधारात्मक वर्चस्व के विरुद्ध संघर्ष चलाया जाना चाहिए। विषमता मूलक जाति व्यवस्था को ध्वस्त करने के भा.क.पा और मा.क.पा दोनों ही जातीय आधार पर आरक्षण नीति का समर्थन करते हैं।

**बोध प्रश्न 5**

**टिप्पणी :** i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिये रिक्त स्थान का प्रयोग करें।
ii) अपने उत्तर की जांच इकाई के अंत में दिए उत्तर के आधार पर करें।

1) जातिवाद के विरुद्ध संघर्ष के लिए मार्क्सवादी किस प्रकार के सुझाव देते हैं?

.....

.....

.....

.....

## 30.10 भारतीय मार्क्सवादी और राष्ट्रीयता का प्रश्न

भा.क.पा, मा.क.पा और भा.क.पा. (माले) सभी राष्ट्रीयताओं की स्वतंत्रता का समर्थन करते हैं। भारत राष्ट्र विभिन्न राष्ट्रीयताओं का समुच्चय है। प्रत्येक राष्ट्रीयता सांस्कृतिक परंपरा से पुष्ट अलग पहचान पर आधारित है। इसीलिए सभी कम्युनिस्ट इस बात से एक सीमा तक सहमत हैं कि विभिन्न सांस्कृतिक समूहों को विकास का अवसर देने के लिए भारतीय यथार्थ को एक संघ का स्वरूप दिया जाना चाहिए। नवें दशक में भारतीय राजनीति में Ethnicity का सवाल उभरकर आया है। अपनी किसी पृष्ठभूमि के नाते जनजातीय समुदायों ने केंद्रीय (मध्य) भारत के क्षेत्रों में झारखंड जैसे जनजातीय राज्यों की मांग उठाई हैं। कम्युनिस्ट पार्टियां इससे सहमत हैं कि सभी ethnic समूहों को अपने क्षेत्र में स्वायत्त कार्य की अनुमति मिलनी चाहिए, जिसकी गारंटी हमारा संविधान भी करता है। कम्युनिस्ट मंडलियों में ethnicity के प्रश्न पर कोई स्पष्ट चिंतन सामने नहीं आया है।

## 30.11 भारतीय मार्क्सवादी और सांगठनिक रणनीति

राजनीतिक गोलबंदी के स्तर पर भा.क.पा और मा.क.पा. ने स्पष्ट रणनीति अपनाई है, जबकि भा.क.पा. (माले) संभ्रम का शिकार बनी हुई है। भा.क.पा. (माले) के कुछ गुट संसदीय मार्ग अपनाना नहीं चाहते और अन्य, विशेषकर इंडियन पीपुल्स फ्रंट (आई.पी.एफ.) संसदीय मार्ग को स्वीकार करती है। सभी पार्टियां संसदीय तरीकों और क्रांतिकारी जनदिशा के बीच तालमेल की समस्या का सामना कर रहे हैं। भा.क.पा. ने चुनावी राजनीति बेहिचक अपना ली है जबकि मा.क.पा. ने चुनावी राजनीति और जनाधारित राजनीति के बीच तालमेल का प्रयास किया है, लेकिन क्रमशः चुनावी राजनीति के चंगुल में फंस गई है। भा.क.पा. (माले) इस प्रश्न पर संभ्रमित रही है। फिर भी वह निचली जातियों और निम्न वर्गों को राजनीतिक गोलबंदी के लिए साथ लाने में सक्षम हुई है। बिहार के संदर्भ में मताधिकार की मांग एक मूलगामी राजनीतिक नारा बन जाता है क्योंकि निचली जातियों को प्रायः मतदान करने ही नहीं दिया जाता। एक जटिल जातिवाद ग्रस्त समाज में वर्गाधारित राजनीतिक रणनीति कोई सरल कार्य नहीं सिद्ध होती।

राजनीतिक संघर्ष की प्रक्रिया में ही कोई स्पष्टतर रणनीति उभर कर आ सकती है।

**बोध प्रश्न 6**

**टिप्पणी :** i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिये रिक्त स्थान का प्रयोग करें।
ii) अपने उत्तर की जांच इकाई के अंत में दिए उत्तर के आधार पर करें।

1) राजनीतिक गोलबंदी के लिए समुचित रणनीति के प्रश्न पर भारतीय मार्क्सवादियों के बीच मतभेदों की ओर संकेत कीजिए।

.....

.....

.....

.....

## 30.12 सारांश

भारतीय मार्क्सवादी चिंतन की योरोप के मार्क्सवादी चिंतन की भांति कोई समृद्ध परंपरा नहीं है। भारतीय इतिहास के काल विभाजन के प्रश्न पर भारतीय मार्क्सवादियों के बीच मतभेद रहे हैं। लेकिन वे इस बात पर सहमत हैं कि भारतीय इतिहास में दास प्रथा का अस्तित्व कभी नहीं था। वे इस बात पर भी सहमत हैं कि औपनिवेशिक काल में भारत पूंजीवादी विकास की प्रक्रिया से गुजरा। भारतीय स्वतंत्रता की प्रकृति, भारतीय राजसत्ता और शासक वर्ग के चरित्र संबंधी प्रश्नों पर उनके बीच मतभेदों का परिणाम था भारत के कम्युनिस्ट आंदोलन में विभाजन। भारतीय मार्क्सवादी जाति व्यवस्था का बोध एक प्रकार के (श्रम) विभाजन के रूप

में करते हैं। जबकि भा.क.पा. और मा.क.पा. दोनों ही राजनीतिक गोलबंदी के संसदीय तरीकों के विरुद्ध नहीं हैं, मा.क.पा. गोलबंदी की रणनीति के प्रश्न पर संभ्रमित दृष्टिकोण अपनाती रही है।

## 30.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

बी.टी. रणदिव, *दी इंडिपेंडेंस स्ट्रगल एंड आफ्टर*, नई दिल्ली, 1988
मैथ्यू कुरियन (सं) *इंडिया–स्टेट एंड सोसाइटी*, नई दिल्ली 1975।

## 30.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न 1**

1) देखें 30.4

**बोध nail 2**

1) देखें 30.4.1

**बोध प्रश्न 3**

1) देखें 30.6.2

**बोध प्रश्न 4**

1) देखें 30.8

**बोध प्रश्न 5**

1) देखें 30.9

**बोध प्रश्न 6**

1) देखें 30.11